

## संशोधति कोयला भंडारण मानदंड

### प्रलिस के लयि

केंद्रीय वदियुत प्राधकिरण, कोयला

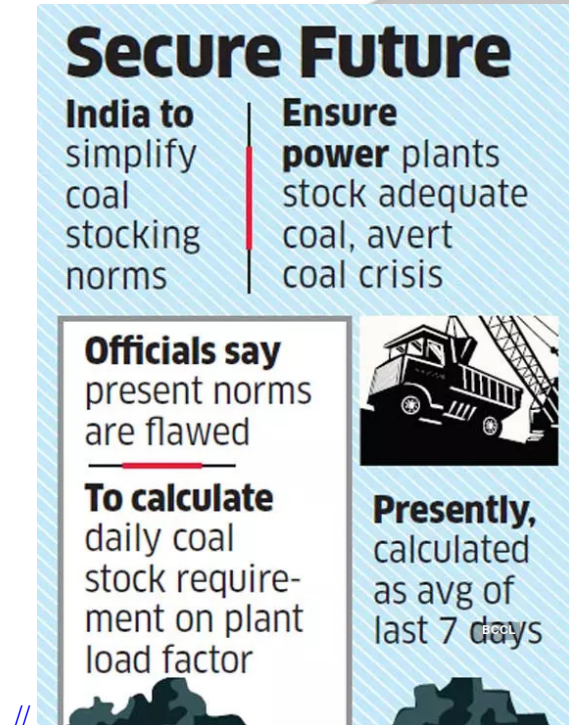
### मेन्स के लयि

कोयला संकट और इसके नहितिरथ, संशोधति कोयला भंडारण मानदंड

## चरचा में क्यों?

हाल ही में [केंद्रीय वदियुत प्राधकिरण](#) (CEA) ने वभिन्न संयंत्रों में [कोयला स्टॉक संकट](#) की स्थिति की पुनरावृत्तिको रोकने के उद्देश्य से ताप वदियुत उत्पादन संयंत्रों में 'कोल स्टॉकगि मानदंडों' को संशोधति कया है।

- **केंद्रीय वदियुत प्राधकिरण (CEA), वदियुत अधनियम 2003 के तहत स्थापति एक संगठन** है। इसका उद्देश्य बजिली उत्पादन के लयि उपलब्ध संसाधनों के इष्टतम उपयोग हेतु प्रत्येक पाँच वर्ष में एक 'राष्ट्रीय बजिली योजना' तैयार करना है।



**Secure Future**

India to simplify coal stocking norms | Ensure power plants stock adequate coal, avert coal crisis

Officials say present norms are flawed

To calculate daily coal stock requirement on plant load factor

Presently, calculated as avg of last 7 days

## प्रमुख बदि

- **पृष्ठभूमि**
  - [अक्तूबर 2021 में भारत के 'थर्मल पावर प्लांटों' को कोयले की भारी कमी](#) का सामना करना पड़ा था, इस संकट के तहत थर्मल स्टेशनों में कोयले का स्टॉक औसतन चार दिनों तक कम हो गया था।

- मांग में तीव्र वृद्धि, आयातित कोयले की कीमत में वृद्धि और मानसून से पहले वदियुत स्टेशनों द्वारा कम कोयले की खरीद आदिकम स्टॉक की स्थिति हेतु उत्तरदायी कारक थे।
- यह भारत में सबसे बड़े कोयला संकटों में से एक था, जसिने आर्थिक रकिवरी को धीमा कर दिया और कुछ व्यवसायों के उत्पादन में कमी को प्रभावित किया।
- कम कोयला स्टॉक की स्थिति ने कई राज्यों को **ऊर्जा एकसंचेज** पर बजिली खरीदने के लिये मजबूर किया था, अक्टूबर माह में बजिली की औसत बाजार समाशोधन कीमत 16.4 रुपए प्रति थ्यूनटि थी, जसिने सरकार को कोयला स्टॉकगि मानदंडों को संशोधित करने हेतु प्रेरित किया गया था।
- **पुराने मानदंड:**
  - पूर्व में कोयले के स्रोत से संयंत्र की दूरी के आधार पर 15-30 दिनों के कोयला स्टॉक को बनाए रखना अनविर्य था।
  - इससे पहले पिट हेड स्टेशनों (Pit Head Stations) में स्थिति बजिली संयंत्रों के लिये 15 दिनों के लिये कोयला स्टॉक रखना अनविर्य था, जबकि खदानों से 200 कमी. के भीतर स्थिति संयंत्रों के लिये इस आवश्यकता को बढ़ाकर 20 दिनि, 1,000 कमी के भीतर वाले संयंत्रों के लिये 25 दिनि और खदानों से अधिक दूर स्थिति संयंत्रों के लिये 30 दिनि किया गया था।
- **संशोधित मानदंड:**
  - यह प्रतविरष फरवरी से जून तक बजिली संयंत्रों द्वारा बनाए जाने वाले पिट हेड स्टेशनों (Pit Head Stations) पर 17 दिनों और नॉन-पिट हेड स्टेशनों (Non-Pit Head Stations) पर 26 दिनों के कोयले स्टॉक को बनाए रखना अनविर्य करता है।
    - नॉन-पिट हेड प्लांट ऐसे बजिली संयंत्र हैं जो कोयले की खदान 1,500 कमी. से अधिक दूर स्थिति होते हैं।
  - कसिी भी दिनि बजिली संयंत्र में कोयले की दैनिक आवश्यकता की गणना 85% प्लांट लोड फेक्टर (Plant Load Factor- PLF) के आधार पर की जाएगी।
    - पूर्ववर्ती मानदंडों के तहत पछिले सात दिनों में न्यूनतम 55% PLF पर संयंत्र की औसत खपत पैटर्न के अनुसार कोयला स्टॉक की मात्रा नरिधारित की गई थी।
    - PLF, संयंत्र द्वारा उत्पन्न वास्तविक ऊर्जा और अधिकतम संभव ऊर्जा के बीच का अनुपात है जो संयंत्र द्वारा उसकी नरिधारित शक्ति पर कार्य करने हेतु पूरे एक वर्ष की अवधि के लिये उत्पन्न किया जा सकता है।
  - नई कार्यप्रणाली का तात्पर्य है कि जनि बजिली संयंत्रों की उपयोगिता दर कम है, उन्हें पहले की तुलना में अधिक कोयले का स्टॉक करना होगा।
  - बजिली संयंत्रों को इन मापदंडों का सख्ती से पालन करना होगा, ऐसा न करने पर जुरमाना लगाया जाएगा यह एक ऐसा पहलू है जो CEA के नयिमों में अब तक मौजूद नहीं था।
- **महत्त्व:**
  - यह ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर अंकुश लगाएगा जसिका सामना हाल ही में देश को करना पड़ा था, जब मानसून के बाद देश में 135 कोयला आधारित बजिली संयंत्रों में से कई महत्त्वपूर्ण कोयला स्टॉक स्तर के कम होने के कारण केवल तीन से चार दिनों की आपूर्ति को पूरा करने के लिये पर्याप्त थे।
  - कोयले के भंडारण के नयिमों में ढील से उत्पादन स्टेशनों के बीच ईंधन का बेहतर वितरण होगा।
    - यह कमी को रोकेगा और देश में मांग की स्थिति के बावजूद नरिबाध बजिली आपूर्ति सुनिश्चित करेगा।
  - यह प्रत्येक बजिली संयंत्र के लिये ईंधन की आवश्यकता को भी कम करेगा और सभी स्टेशनों के बीच बेहतर वितरण को सक्षम करेगा।

## कोयला

- यह सबसे अधिक मात्रा में पाया जाने वाला **जीवाश्म ईंधन** है। इसका उपयोग **घरेलू ईंधन के रूप में, लोहा, इस्पात, भाप इंजन जैसे उद्योगों में और बजिली पैदा** करने के लिये किया जाता है। **कोयले से उत्पन्न बजिली को 'थर्मल पावर'** कहते हैं।
- आज हम जसि कोयले का उपयोग कर रहे हैं वह **लाखों साल पहले बना** था, जब वशाल **फर्न और दलदल पृथ्वी की परतों** के नीचे दब गए थे। इसलिये कोयले को **बरीड सनशाइन (Buried Sunshine)** भी कहा जाता है।
- चीन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और भारत **दुनिया के प्रमुख कोयला उत्पादकों में शामिल हैं।**
- भारत के प्रमुख कोयला उत्पादक क्षेत्रों में **झारखंड का रानीगंज, झरिया, धनबाद और बोकारो** शामिल हैं।
- **कोयले को भी चार रैंकों में वर्गीकृत किया गया है:** एन्थ्रेससाइट, बट्टिमिनिस, सबबट्टिमिनिस और लग्नाइट। यह रैंकगि कोयले में मौजूद कार्बन के प्रकार व मात्रा और कोयले की उष्मा ऊर्जा की मात्रा पर नरिभर करती है।

## स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस